

जात सुजात केवलज्ञानं, स्वयंप्रभू प्रभु स्वयं प्रधानं ।
 ऋषभानन ऋषि भानन दोषं, अनंतवीरज वीरज कोषं ॥
 सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं ।
 वज्रधार भवगिरि वज्जर हैं, चन्द्रानन चन्द्रानन वर हैं ॥
 भद्रबाहु भद्रनि के करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता ।
 ईश्वर सबके ईश्वर छाजें, नेमिप्रभु जस नेमि विराजें ॥
 वीरसेन वीरं जग जानें, महाभद्र महाभद्र बखानें ॥
 नमों जसोधर जसधरकारी, नमों अजित वीरज बलधारी ॥
 धनुष पाँचसै काय विराजै, आयु कोटि पूर्व सब छाजै ।
 समवशरण शोभित जिनराजा, भवजल-तारन-तरन जिहाजा ॥
 सम्यक् रत्नत्रय-निधि दानी, लोकालोक-प्रकाशक ज्ञानी ।
 शत-इन्द्रनि करि वंदित सोहैं, सुन-नर-पशु सबके मन मोहैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्यमानविंशतितीर्थकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

तुमको पूजें वंदना, करैं धन्य नर सोय ।

‘द्यानत’ सरधा मन धरैं, सो भी धर्मी होय ॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

मैं महा-पुण्य उदय से जिन-धर्म पा गया ॥ टेक ॥

चार घाति कर्म नाशे, ऐसे अरहंत हैं ।

अनन्त चतुष्टय धारी, श्री भगवन्त हैं ॥

मैं अरहंत देव की शरण आ गया ॥ मैं. ॥

अष्ट कर्म नाश किये, ऐसे सिद्ध-देव हैं ।

अष्ट गुण प्रकट जिनके, हुए स्वयमेव हैं ॥

मैं ऐसे सिद्ध देव की शरण आ गया ॥ मैं. ॥

वस्तु का स्वरूप बताये, वीतराग-वाणी है ।

तीन लोक के जीव हेतु, महाकल्याणी है ॥

मैं जिनवाणी माँ की शरण आ गया ॥ मैं. ॥

परिग्रह रहित, दिगम्बर मुनिराज हैं ।

ज्ञान-ध्यान सिवा नहीं, दूजा कोई काज है ॥

मैं श्री मुनिराज की शरण आ गया ॥ मैं. ॥